|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 24. Juni | | |
| **Hochfest der Geburt Johannes des Täufers** | | |
| Am Vorabend: Erste Lesung: Jer 1,4-10; Zweite Lesung: 1 Petr 1,8-12; Evangelium: Lk 1,5-17 | | |
| Am Tag: Erste Lesung: Jes 49,1-6; Zweite Lesung: Apg 13,16.22-26; Evangelium: Lk 1,57-66.80 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 835 | Sankt Johannes, hoch in Gnaden |
|  | GL 542, 1+3 | Ihr Freunde Gottes |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 128 | Herr, erbarme dich |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 71, 5-8.15 u. 17 (Vorabend) | |
|  | Kehrvers: GL 56, 1 | Freut euch, wir sind Gottes Volk |
|  | GL 419 | Tief im Schoß meiner Mutter |
|  |  |  |
|  | Psalm 139, 1-3.13-16 (Am Tag) | |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 55, 1 | Jubelt, ihr Lande |
|  | GL 226 | Bereitet den Weg des Herrn |
|  | GL 629, 1 | Du führst mich hinaus ins Weite |
|  | oder | |
|  | Psalmlied: | |
|  | GL 428, 1+4+5 | Herr, dir ist nichts verborgen |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Verse: vom Vorabend und vom Tag: | |
|  | *Er kam als Zeuge, um Zeugnis abzulegen für das Licht* | |
|  | *und das Volk für den Herrn zu bereiten.* | |
|  |  | |
|  | *Du wirst Prophet des Höchsten heißen;* | |
|  | *Denn du wirst dem Herrn vorausgehen und ihm den Weg* | |
|  | *bereiten.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 354 | Gott ist dreifaltig einer |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 543, 1+3+4 | Wohl denen, die da wandeln |
|  | GL 347, 2+3 | Der Geist des Herrn |
| Sanctus: | GL 194 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes unschuldig |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 275, 1!+2+4 | Selig, wem Christus |
|  | Alternativmelodie: | GL 484 |
|  | GL 384, 1-3 | Hoch sei gepriesen |
| Schluss: | GL 380, 4 | …, der Propheten hehre Menge |
|  | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |
|  | GL 552 | Herr, mach uns stark |